Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain College, Ara.

Notes for - M.A. Sem-I, CC-3, Unit-2

TOPIC:- गुर्जर-प्रतिहारों का राजनीतिक इतिहास :- गुर्जर अपने आपको सूर्यवंशी क्षत्रिय मानते हैं। उनका दावा है कि उनके पूर्वज लक्ष्मण ने रामचंद्र के प्रतिहार (द्वारपाल) का कार्य किया था। इसलिए वे प्रतिहार कहलाने लगे। अन्य प्राचीन राजवंशों की तरह गुर्जरों की उत्पत्ति भी विवादास्पद है। अनेक विद्वानों की धारणा है कि, गुर्जर हूणों के साथ भारत आए तथा पंजाब से राजपुताना के क्षेत्र में बस गये। इसलिए पंजाब और राजपुताना में गुर्जर नाम वाले अनेक स्थान मिलते हैं। जैसे- गुजरानवाला, गुजरखान, गुजरगढ़ इत्यादि। उनका क्षेत्र गुर्जर देश/गुजरात्र के नाम से भी विख्यात हुआ। इस मत को अधिक मान्यता प्राप्त नहीं है।

गुर्जर प्रतिहारों को राजपूत माना जाता है। बौक के जोधपुर अभिलेख से गुर्जर-प्रतिहारों की उत्पत्ति एवं आरंभिक इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हरिचंद्र ने जोधपुर के निकट माण्डव्यपुर/मंडोर में अपना राज्य स्थापित किया। उसके पुत्रों ने नंदीपुर, भड़ौच, उज्जयिनी आदि में भी अपनी शाखाएँ स्थापित की। हर्षवर्धन के समय तक गुर्जर-प्रतिहारों का उदय एक महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति के रूप में हो चुका था।

⟶

→ पालों के अतिरिक्त उत्तरी भारत की दूसरी महत्वपूर्ण शक्ति गुर्जर प्रतिहारों की थी। गुर्जर प्रतिहारों ने उत्तरी भारत में एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया तथा कन्नौज की प्रतिष्ठा पुनर्स्थापित की। कन्नौज पर होने वाले त्रिदलीय संघर्ष में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। इनके पतन के पश्चात् इन्हीं के अवशेषों पर अनेक राजपूत-राज्यों का उदय हुआ।

प्रमुख गुर्जर-प्रतिहार शासक/राजा :-

(i) नागभट्ट प्रथम (730-756 ई.)
(ii) वत्सराज (783-795 ई.)
(iii) नागभट्ट II (795-833 ई.)
(iv) मिहिरभोज (836-889 ई.)
(v) महेंद्रपाल I (890-910 ई.)
(vi) महिपाल I (912-944 ई.)

नागभट्ट प्रथम → गुर्जर प्रतिहारों का पहला प्रमुख राजा था। चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख तथा बाणरचित - हर्षचरित्र में इसका उल्लेख मिलता है। नागभट्ट ने गुर्जरों की विभिन्न शाखाओं को एक सूत्र में बांधकर उनकी स्थिति मजबूत की। उसने मालवा पर अधिकार किया। मिहिरभोज की ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार नागभट्ट ने अरबों को पराजित किया तथा मालवा से गुजरात तक अपनी सीमा विस्तृत की। राष्ट्रकूटों से भी इसका संघर्ष हुआ।

→

→ (ii) वत्सराज → यह इस वंश का दूसरा प्रभावशाली राजा था इसने राजपूताना के मध्यभाग तथा उत्तर भारत के पूर्वी भाग पर भी अधिकार किया। वत्सराज के समय में ही कन्नौज के स्वामित्व के लिए त्रिदलीय संघर्ष आरंभ हुआ। वत्सराज ने पाल शासक धर्मपाल को पराजित कर उसका राजमुकुट छीन लिया, परंतु जिस समय यह बंगाल से वापस आ रहा था, उसी समय राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने पराजित कर मारवाड़ की तरफ भागने को मजबूर कर दिया। वत्सराज की पराजय से गुर्जरों की बढ़ती शक्ति पर अंकुश लग गया।

(iii) नागभट्ट II → इसने पुनः गुर्जरों की प्रतिष्ठा एवं शक्ति स्थापित की। ग्वालियर प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि इसने आंध्र, सिंध, विदर्भ और कलिंग को पराजित किया। और वत्स, मत्स्य तथा तुरुष्कों (अरबों) से संघर्ष किया। इसने कन्नौज पर आक्रमण कर धर्मपाल द्वारा स्थापित आयुधवंशी शासक चक्रायुध को गद्दी से हटा दिया और अपनी सत्ता स्थापित की। इसके इस कार्य से धर्मपाल से युद्ध अनिवार्य हो गया। मुंगेर के पास हुए युद्ध में धर्मपाल की पराजय तो हुई, परंतु कन्नौज पर उसका स्थायी अधिपत्य नहीं हो सका।

चक्रायुध और धर्मपाल ने राष्ट्रकूटों से मैत्री कर राष्ट्रकूट शासक गोविंद III को कन्नौज पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। 810 ई० में गोविंद-III ने नागभट्ट को पराजित कर मालवा एवं गुजरात पर अधिकार कर लिया।

(IV) मिहिर भोज :- गुर्जर-प्रतिहारों का श्रेष्ठतम शासक मिहिरभोज/भोज प्रथम था। अपने पिता रामभद्र की हत्या कर गद्दी प्राप्त की थी। इन्होंने गुर्जरों की शक्ति पराकाष्ठा पर पहुँचा दी। इसने अपने अधीनस्थ सामंतों पर दबाव डालकर उन्हें अपनी अधीनता स्वीकार करने को बाध्य किया। गुहिलों और चेदियों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित कर उसने अपनी स्थिति सुदृढ़ की।

भोज ने कला, साहित्य एवं धर्म को भी संरक्षण प्रदान किया। उसके सिक्कों और अभिलेखों में उसे "आदिवराह" की उपाधि से विभूषित किया गया है। इससे पता लगता है कि वह वैष्णव धर्म का संरक्षक था। अरब यात्री सुलेमान उसकी प्रशंसा करते हुए लिखता है, "इस राजा के पास बहुत बड़ी सेना है और अन्य किसी दूसरे राजा के पास उसकी जैसी अश्व सेना नहीं है। वह अरबों का इस्लाम धर्म का कोई शत्रु नहीं है। उसका राज्य जिह्व के आकार का है। वह धन-~~वैभवशाली~~ वैष्णव सम्पन्न है और उसके पास बहुत अधिक संख्या में घोड़े और ऊँट हैं। भारतवर्ष में उसके अतिरिक्त कोई राजा नहीं है, जो डाकुओं से इतना सुरक्षित है।"